

सोयाबीन में समेकित कीट प्रबंधन " पर वेबिनार

भा.कृ.अनु.प.- भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित वेबिनार की श्रृंखला के एक भाग के रूप में इंदौर शहर आधारित संस्थान ने "सोयाबीन में समेकित कीट प्रबंधन" पर आज दिनांक 14.06.2021 को 110 प्रतिभागियों की उपस्थिति में आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 110 प्रतिभागियों की भागीदारी थी, जिसमें प्रगतिशील किसानों के साथ ही कृषि वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों और भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों, अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना के केंद्रों और मध्य प्रदेश कृषि विभाग में कार्यरत शोधकर्ता शामिल थे। प्रतिभागियों ने तेलंगाना, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, पंजाब, दिल्ली और उत्तराखंड जैसे देश भर के विभिन्न राज्यों और महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान और अन्य उत्तरी राज्यों जैसे प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्यों का प्रतिनिधित्व किया।



इस विषय पर चर्चा करते हुए कार्यक्रम के वक्ता डॉ. ए.एन. शर्मा, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) ने कहा कि किसानों को कीट नियंत्रण के सभी तरीकों रासायनिक नियंत्रण के साथ भौतिक, सांस्कृतिक, यांत्रिक और जैविक नियंत्रण विकल्प पर भरोसा करना चाहिए । जलवायु स्मार्ट कीट प्रबंधन में इन सभी कीट नियंत्रण विकल्पों के साथ अंतिम विकल्प के रूप में रासायनिक नियंत्रण का उपयोग करना चाहिए। उन्होंने फसल के शुरुआती चरणों में रासायनिक कीटनाशकों और खरपतवारनाशियों के कुछ अनुशंसित मिश्रणों के उपयोग की बात कही, जो सोयाबीन को कीटों की शुरुआती पीढ़ियों से बचाती हैं। उन्होंने कीटों के नियंत्रण के लिए विभिन्न उपायों जिसमें फेरोमोन ट्रैप, प्रकाश प्रपंच, बर्ड पर्च, येलो स्टिकी ट्रैप और जैविक नियंत्रण के बारे में चर्चा की।



डॉ. शर्मा ने बताया कि हानिकारक कीटों के प्राकृतिक शत्रु या जैविक कीट नियंत्रण के उपाय हानिकारक कीटों की आबादी को 40% से 100% तक कम कर सकते हैं। पर्णभक्षी कीटों के लिए ट्रैप क्रॉप (जाल फसल) के लिए सूवा को सोयाबीन के साथ 12:2 अनुपात (सोयाबीन: सुवा) के उपयोग करने इनकी संख्या को कम किया जा सकता है।

उन्होंने बबुल, धतूरा और सीताफल आदि की पत्तियों और बीजों का उपयोग करके पर्यावरण के अनुकूल कीटनाशकों को विकसित करने के लिए वनस्पति आधारित कीटनाशकों के विभिन्न स्रोतों और तरीकों के बारे में भी विस्तार से बताया। डॉ. शर्मा ने कीटनाशकों के लिए बीज उपचार पद्धति के बारे में जानकारी दी और इस बात पर भी बल दिया कि बीजों पर फफूंदनाशी के उपचार के बाद कीटनाशक एफ.आई.आर. (कवकनाशी, कीटनाशक और राइजोबियम) दृष्टिकोण के रूप में को अलग से लगाया जाना चाहिए।

डॉ. शर्मा ने कुछ नई अधिसूचित किस्मों जो कि तन मक्खी, चक्र भृंग, पर्ण भक्षी, लीफ हॉपर, बीन बग और फली भेदक आदि कीटों के लिए प्रतिरोधी हैं, के उपयोग के बारे में भी सुझाव दिया। उन्होंने सोयाबीन के लिए विभिन्न रासायनिक कीटनाशकों की अनुशंसित मात्रा के बारे में चर्चा की और जोर दिया छिड़काव के दौरान पानी की इष्टतम मात्रा के उपयोग पर जोर दिया।

वेबिनार की अध्यक्षता संस्थान की निदेशक डॉ. नीता खांडेकर ने की जबकि समन्वयक डॉ. सुभाष चंद्रा ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।